है कि जब तक सरकार बोडोलैण्ड के लोगों की इस वास्तविक मांग को स्वीकार नहीं करती, हम कभी भी प्रसन्न नहीं होंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस विधेयक का पूर्ण समर्थन करता हूं। यह स्वागत योग्य कदम है। मैं पुन: निवेदन करता हूं कि सरकार को बोडो क्षेत्र के लोगों के कल्याण के लिए, ऐसा नीतिगत निर्णय लेना चाहिए जो बोडोलैण्ड के लोगों के हित में भी हो।

[हिन्दी]

श्री राजो सिंह (बेगूसराय): सम्माननीय सभापति महोदय, यह जो बिल हमारे सामने राज्य सभा से पारित होकर मिजोरम केन्द्रीय विश्वविद्यालय विधेयक, 1999 प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। पूर्वांचल में केन्द्रीय विश्वविद्यालय काफी दिनों के बाद स्थापित किया जा रहा है, उसके लिए मैं श्री मुरली मनोहर जोशी जी को बधाई देता हूं, धन्यवाद देता हूं। हमारे कई साथियों ने सदन में अपनी-अपनी बात रखी है। खासकर मिजोरम इलाके के नौजवानों को दूसरा रास्ता न अपनाना पड़े, इससे उन्हें लाभ मिलेगा। हिन्दुस्तान में कई ऐसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं, जिनकी स्थिति खराब बनी हुई है। उनको देखने से ऐसा पता चलता है कि भारत सरकार को, खासकर मानव संसाधन विकास मंत्री जी को इस पर मुस्तैदी से विचार करना होगा। यह विधेयक कुछ ही घंटों में संसद से स्वीकृत होकर राष्ट्रपति जी के पास जाएगा और एक्ट के रूप में ले लेगा। इसमें लगभग 47 खण्ड हैं। उनमें बताया गया है कि एकेडेमिक कौंसिल होगी, सीनेट होगी और सिंडीकेट होगी। लेकिन आज हिन्दुस्तान के विश्वविद्यालयों की जो हालत है उसमें सीनेट और सिंडीकेट नहीं बन पाती हैं।

अपराह्न 2.06 बजे

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन* हुए]

वाइस-चांसलर अपने मन से जिस तरह से यूनिवर्सिटी को चलाना चाहते हैं, चला सकते हैं और चलाते भी हैं। चाहे वह बनारस की हिन्दू यूनिवर्सिटी हो या अलीगढ़ की मुस्लिम यूनिवर्सिटी हो।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री राजो सिंह, माननीय प्रधान मंत्री जी अब उनकी हाल ही में की गई मॉरिशस यात्रा के संबंध में वक्तव्य देंगे। आप उनके वक्तव्य के पश्चात् अपना भाषण जारी रख सकते हैं।

माननीय प्रधान मंत्री जी, कृपया आप बोलिए।

अपराह्न 2.07 बजे

प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य

प्रधानमंत्री की मॉरीशस यात्रा

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): महोदय, जैसा कि सदन को विदित ही है, मॉरीशस और भारत के बीच घनिष्ठ और पारस्परिक संबंध हैं। यह संबंध समय-समय पर उच्च-स्तर पर हुए दौरों से मजबूत होता रहा है। मुझे मॉरीशस के प्रधान मंत्री डा. नवीन चन्द्र रामगुलाम द्वारा नई सहस्राब्दि में अपने देश के प्रथम स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। यह इस बात का प्रतीक है कि मॉरीशस के नेताओं और लोगों ने महात्मा गांधी जी के डाँडी नमक मार्च की याद में 12 मार्च का दिन अपने स्वतंत्रता दिवस के रूप में चुना। यह महात्मा गांधी के मूल्यों और भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दिनाँक 10-12 मार्च को मेरी यात्रा से मॉरीशस के साथ उच्च-स्तर पर संपर्कों को नई दिशा प्रदान करने तथा हमारे उन विशेष मैत्रीपूर्ण संबंधों को जारी रखने का अवसर मिला है जो हमारे धर्म, भाषा, संस्कृति, हमारी साझी सभ्यता और विरासत की ठोस बुनियाद पर आधारित है।

मॉरीशस में अपने प्रवास के दौरान मैं वहां के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और उपराष्ट्रपति तथा असेम्बली के अध्यक्ष एवं राजनीतिक पार्टियों के नेताओं से मिला। उनके साथ हुई बातचीत से द्विपक्षीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर हमारी गहरी समझ और हमारा समान दृष्टिकोण और प्रगाढ़ हुआ है जो कि हमारे संबंधों की विशेषता है। हमारा हमेशा से यह प्रयास रहा है कि हम अपनी विशेषज्ञता और अनुभव को मॉरीशस की सरकार और जनता के साथ बाँटें। मेरी यात्रा के दौरान व्यापार और वाणिज्य, और सूचना-प्रौद्योगिकी तथा 9 मिलियन अमरीकी डॉलर के ऋण के समुद्री तटों की निगरानी करने वाले उपकरणों की आपूर्ति के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के तीन समझौतों पर तथा समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इन समझौतों से इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हमारे आपसी सहयोगपूर्ण संबंध और मजबूत होंगे।

यात्रा के दौरान यह भी घोषणा की गई कि पोर्ट लुई और चेन्नै के बीच सीधा हवाई मार्ग स्थापित किया जाएगा। इस घोषणा की मॉरीशस के लोगों ने काफी सराहना की।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

यात्रा के दौरान मुझे मॉरीशस में इन्दिरा गांधी भारतीय संस्कृति केन्द्र, जिसकी हमारे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की सहायता से स्थापना की गई है, का उद्घाटन करने का भी अवसर मिला। इस नए कॉम्प्लैक्स से हमारा द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अधिक सुदृढ़ होगा। आशा है कि यह केन्द्र सांस्कृतिक कार्यकलापों के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभरेगा जिससे इस क्षेत्र का भारतीय समुदाय लाभान्वित होगा।

प्रधान मंत्री श्री रामगुलाम के साथ मुझे मॉरीशस के उत्तरी भाग में ईलोट गाँव में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के नाम पर एक शैक्षिक व सांस्कृतिक संस्थान की आधारशिला रखने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत सरकार इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए 1 मिलियन अमरीकी डॉलर का योगदान देगी। इस अवसर पर मेरे सम्मान में एक नागरिक अभिनंदन समारोह भी आयोजित किया गया। अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं को कायम रखते हुए मैंने मॉरीशस के लोगों को यह आश्वासन दिया कि उनकी जरूरत के समय भारत, मॉरीशस के लोगों का सदा साथ देगा।

इस दौरे से हमारे द्विपक्षीय सबंधों, जो निस्संदेह दोनों देशों के बीच घनिष्ठ और परस्पर गहरी समझ का एक शानदार उदाहरण है, को सुदृढ़ करने में और अधिक सहायक सिद्ध होंगे। सरकार की यह नीति होगी कि इस संबंध को भविष्य में भी निरन्तर बढ़ाया जाए।

[हिन्दी]

श्री श्यामाचरण शुक्ल (महासमुंद): हम तो आपके हिन्दी के भाषण सुनने के लिए तरसते रहते हैं। कभी-कभी अंग्रेजी के बाद हिन्दी में भी बोल दिया करिए।

[अनुवाद]

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता उत्तर-पश्चिम): महोदय, इसके अलावा संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन भी भारत यात्रा पर आ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : यह इससे कैसे संबंधित है?

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : हम इस यात्रा के सफल संपन्न होने के लिए अपनी शुभकामनाएं देते हैं। हम सब इस यात्रा की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें आशा है कि यह एक यादगार अवसर होगा और भारत-अमरीका संबंधों को एक नई दिशा मिलेगी।

अपराह्न 2.12 बजे

मिजोरम विश्वविद्यालय विधेयक—*जारी*

[हिन्दी]

श्री राजो सिंह (बेगुसराय): अध्यक्ष महोदय, मैं केन्द्रीय विश्वविद्यालय विधेयक पर अपनी बात सदन के सामने रख रहा था। मैंने कहा कि यह कुछ ही क्षणों में एक्ट का रूप ले लेगा। लेकिन मुझे भय है कि आज सारे हिन्दुस्तान में जो यूनिवर्सिटीज की स्थिति है, चाहे वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय हो या राज्य विश्वविद्यालय हो, वे राजनैतिक अखाड़ा बनते जा रहे हैं। मैं आदरणीय जोशी जी से निवेदन करूंगा कि जिस पर्पज से वहां के लोगों की मांग थी, काफी दिनों के बाद आपने उसका सही रूप में पालन करने का प्रयास किया है। आप इस पर निगरानी रखेंगे, इसका डैमोक्रेटिक रूप रखेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। ऐसा न हो कि अहैया खां की तरह एक हाथ में यह संस्था चली जाये और वह संस्था सद्गुण देने के बदले दुर्गुण देने का काम करें। मैं पुन: आपको बधाई देता हूं और आशा और विश्वास करता हूं कि सदन को यह जानने का हक होगा कि यदि यह एक्ट का रूप ले और जब आपने इसका विधिवत् उद्घाटन किया तो सही रूप ले और वहां सीनियर सिंडिकेट एकेडैमिक काउंसिल ये सारी संस्थाएं वहां फंक्शन करें। यह अच्छी यूनिवर्सिटी का रूप ले। जो पूर्वांचल के लोग रास्ते से भटक गये हैं, वे सही रास्ते पर आ सकें और भारत सरकार को अपनी नयी दिशा दे सकें, यह हमारी शुभकामना है। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : डा. रघुवंश प्रसाद सिंह - अनुपस्थित। चूंकि और किसी सदस्य का नाम बोलने वालों की सूची में नहीं है अत: मैं अब माननीय मंत्री को उत्तर देने के लिए कहता हूं।

[हिन्दी]

मानव संसाधन विकास मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा महासागर विकास मंत्री (डा. मुरली मनोहर जोशी): अध्यक्ष महोदय, मैं सदन का आभारी हूं कि इस विधेयक का सभी ने सर्वसम्मति से समर्थन किया है। 1986 में एक त्रिपक्षीय समझौता भारत सरकार, मिजो नेशनल फ्रंट और मिजोरम की सरकार के बीच में हुआ था जिसके अनुसार वहां एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी थी। यह बात 1986 में तय हुई थी लेकिन अनेक कारणों से मिजो एकॉर्ड के इस पक्ष का क्रियान्वयन नहीं किया गया। मौजूदा सरकार ने उत्तर पूर्वांचल के लिए शिक्षा के